ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

स एष एक एव वृदेक एव। अथर्व 13/4/20
वह ईश्वर एक है निश्चय से वह एक ही है।
God is one Surely He is the only one.

वर्ष 37, अंक 3 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 25 नवम्बर, 2013 से रविवार 1 दिसम्बर, 2013
विक्रमी सम्वत् 2070 सृष्टि सम्वत् 1960853114
दयानन्दाब्द : 189 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

शान्तिदेवी आर्य कन्या गुरुकुल सैनिक विहार, दिल्ली के
नव निर्मित भवन का लोकार्पण

दिल्ली के पीतमपुरा क्षेत्र में सैनिक विहार आर्य समाज मन्दिर परिसर में विगत 4 वर्षों से आदिवासी क्षेत्र की कन्याओं के लिए कन्या गुरुकुल संचालित है। अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित इस कन्या गुरुकुल के लिए भवन का निर्माण पिछले 3 वर्षों से हो रहा था।

10 नवम्बर 2013 को रविवार को शान्तिदेवी आर्य कन्या गुरुकुल के नव निर्मित भवन का भव्य उद्घाटन एवं लोकार्पण समारोह सम्पन्न हुआ। आर्य जगत् के तपोनिष्ठ संन्यासी स्वामी धर्मानन्द सरस्वती एवं साध्वी उत्तमायती के पावन सान्निध्य में आचार्य जीववर्द्धन शास्त्री, आचार्य रामनिवास शास्त्री तथा आचार्य आनन्द प्रकाश

– शेष पृष्ठ 4 पर

नव निर्मित भवन का उद्घाटन करते महाशय धर्मपाल जी साथ में हैं स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती एवं अन्य।

कन्याओं के चरण धोकर नव निर्मित भवन में प्रवेश कराते श्री मनोज आनन्द जी।

रोहिणी सै.-8 में श्री सत्य सनातन वेद मन्दिर समिति द्वारा सेवा, संस्कृति और साधना की मसाल का शुभारम्भ
वेद मन्दिर सेवाश्रम के भवन का शिलान्यास सम्पन्न

जन-जीवन में जागृति, नवीनता और उत्साह लाने के लिए समय-समय पर उत्सवों के आयोजन की प्राचीन परम्परा रही है। इसी श्रृंखला में "श्री सत्य सनातन वेद मन्दिर समिति, रोहिणी सै.-8" के तत्त्वावधान में 12 अक्तूबर, 2013 को "वेद मन्दिर सेवा आश्रम" के शिलान्यास के भव्य समारोह का आयोजन किया गया।

इस समारोह से 5 दिन पूर्व यानि 7 अक्तूबर, से ही इस आश्रम की भूमि पर "गायत्री महायज्ञ" और "संगीतमयी रामकथा" का आरम्भ कर दिया गया था। इन 6 दिनों में याज्ञिकों द्वारा श्रद्धापूर्वक गायत्री मंत्रों की 51 हजार आहुतियां समर्पित की गई। प्रात: 6:30 से 9 बजे तक सात्विक वेला में आस-पास का सम्पूर्ण वातावरण सुगन्धित और मंत्रों की ध्वनि से गुंजायमान होता रहा। यज्ञ के ब्रह्मा और इस समिति के अध्यक्ष ब्र. राजसिंह आर्य बीच-बीच में अपने मधुर सन्देश से याज्ञिकों को उद्बोधन भी प्रदान करते रहें।

– शेष पृष्ठ 5 पर

गायत्री महायज्ञ सम्पन्न कराते आचार्य अखिलेश्वर जी साथ में हैं आर्य तपस्वी श्री सुखदेव जी। अपनी आहुतियां समर्पित करते श्रद्धालुजन।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन डरबन (द.अ.) के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में
भारतीय प्रतिनिधियों का दल डरबन रवाना

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2012 में लिए गए निर्णय के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों की श्रृंखला में वर्ष 2013 का सम्मेलन आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका के तत्त्वावधान में डरबन शहर में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिनांक 28 नवम्बर एवं 1 दिसम्बर तक आयोजित किया जा रहा है। इस सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधियों का दल दो जत्थों में रवाना हुआ। पहला जत्था 19 नवम्बर को तथा दूसरा 27 नवम्बर को रवाना हुआ। द्वितीय जत्थे का मुम्बई हवाई अड्डे पर लिया गया एक चित्र।

पुस्तक मेलों के माध्यम से आम जनता तक वैदिक साहित्य पहुंचाने का कार्य जारी
सम्बन्धित सूचना एवं पुस्तक मेलों की जानकारी अन्दर के पृष्ठों में

वेद-स्वाध्याय

अज्ञानियों की दुर्गति

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

इमे ये नार्वाङ्.न परश्चरन्ति न ब्राह्मणासो सुतेकरासः। त एते वाचमभिपद्य पापया सिरीस्तन्त्रं तन्वते अप्रजज्ञयः।। ऋग्वेद 10/71/9

अर्थ—***(इमे ये)*** ये जो अविद्वान् ***(अर्वाङ् न)*** न तो इस लोक की विद्या, शास्त्र और ***(न परः चरन्ति)*** न ही परलोक के शास्त्र, अध्यात्म-विद्या को जानते हैं ***(न ब्राह्मणासः)*** न ही वेद के ज्ञाता विद्वान् हैं ***(न सुतेकरासः)*** न यज्ञादि कर्मकाण्ड के कर्ता हैं ***(ते एते)*** वे ***(अप्रजज्ञयः)*** अविद्वान् मनुष्य (पापया वाचम् अभिपद्य) मलिन वाणी को प्राप्त होकर या पाप-बुद्धि से वेदवाणी को विपरीत जानकर ***(सिरीः)*** हल चलाते या ***(तन्त्रम् तन्वते)*** तन्तुवाय आदि का साधारण कार्य करते हैं।

शास्त्रों में धर्मयुक्त कर्मों को करने का विधान किया है। धर्म की परिभाषा महर्षि कणाद ने इस प्रकार की है—**यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः** (वैशेषिक० १.२) जिससे इस लोक और परलोक दोनों की प्राप्ति हो उसे धर्म कहते हैं। उपनिषदों में इसे परा-अपराविद्या कहा है। अपराविद्या में वेद-वेदांगों की गणना की है जिससे समस्त लौकिक कर्मों का अनुष्ठान कर स्वर्ग की प्राप्ति की जा सके। परा-विद्या उसे कहते हैं जिससे वह अविनाशी ब्रह्म जाना जाये।

अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते॥ ईशो० ११॥

विद्या और अविद्या, ज्ञान और कर्म इन दोनों को जो जानते हैं वे अविद्या [भौतिक विज्ञान] द्वारा मृत्यु अर्थात् कष्टों को पार कर विद्या से अमृत मोक्ष पद को प्राप्त करते हैं। परन्तु जो इन दोनों से अनभिज्ञ हैं, उनकी गति क्या होगी इसे वेद बतला रहा है—**इमे ये नार्वाङ् न परश्चरन्ति** जो न तो इस लोक की विद्या, शास्त्र और न ही परलोक, अध्यात्म-विद्या को जानते हैं। **न ब्राह्मणासः न सुतेकरासः** न ही वेद के ज्ञाता विद्वान् हैं और न ही वेदानुसार यज्ञादि उत्तम कर्मों को करने वाले हैं, वे मन्दबुद्धि हल चलाने और वस्त्रादि बुनने जैसा श्रम करने में ही सारी आयु व्यतीत कर देते हैं। यहाँ हल चलाने या वस्त्र बुनने की निन्दा नहीं की गई है अपितु इन्हें सामान्य जन भी कर सकते हैं, यह कह कर इन्हें विशिष्ट श्रेणी से पृथक् किया गया है।

मनुष्य जन्म की प्राप्ति भोग और अपवर्ग के लिये हुई है। इस संसार में सुखपूर्वक जीने के लिये भौतिक विज्ञान द्वारा पदार्थों के गुण-धर्म जान उनसे सुख-साधनों का संग्रह करना ही अपराविद्या का अभिप्राय है जिससे आधिदैविक और आधिभौतिक दुःखों से छूट आध्यात्मिक परा-विद्या को प्राप्त करने में सुविधा रहे।

जो मूढमति इन दोनों विद्याओं से अनभिज्ञ हैं। जिन्हें न तो इस संसार में कैसे जिया जा सकता है, इसका ज्ञान है और न ही आत्मा-परमात्मा को जानते हैं **न ब्राह्मणास न सुतेकरासः** न वेदों के विद्वान् और न ही वेदानुकूल कर्मों को करने में कुशल हैं वे **त एते वाचमभिपद्य पापया** वेदवाणी को प्राप्त करके भी बुद्धि की मलिनता के कारण उसका अभिप्राय समझ नहीं पाते। जैसे कि यदि गधे के ऊपर चन्दन की लकड़ियाँ लाद दी जायें तो भी वह चन्दन के गुणों से अनभिज्ञ रहता हुआ केवल उस भार को ही ढोता है। जैसे जंगल में स्थित भीलनी गजमुक्ता को छोड़ गुंजा धारण करती है। इसलिये विद्या या ज्ञान की प्राप्ति करना बहुत आवश्यक है अन्यथा मनुष्य जीवन पशुतुल्य हो लोक-परलोक दोनों बिगड़ जायेंगे।

वित्तं बन्धुर्वयःकर्म विद्या भवति पञ्चमी। एतानि मान्यस्थानानि गरीयो यद्यदुत्तर॥

धन, बन्धु, आयु, कर्म और पाँचवीं विद्या ये मान-सम्मान दिलाने वाले हैं। इनमें भी धन से बन्धु, बन्धु से आयु, आयु से कर्म और कर्म से विद्या का स्थान अधिक है। बिना विद्या के धर्म-अधर्म का ज्ञान नहीं होता इसलिये धर्म का मर्म जानने वाले जन विद्या का दान दूसरों को देने में तत्पर रहें। विद्या कामधेनु के समान है जो अकाल में भी फलदायिनी है और प्रवास अर्थात् परदेश में माता के समान है इसलिये विद्या को गुप्त धन कहते हैं। जो पण्डितों के चरणारविन्दों में रहता हुआ पढ़ता, लिखता और शङ्का का समाधान करता है, जैसे सूर्य की किरणों से कमलिनी का पुष्प खिल जाता है, वैसे ही उसकी बुद्धि विकसित हो जाती है। जो पढ़ने में असमर्थ हो उसे चाहिये कि विद्वान् से धर्माधर्म को सुने और अधर्म तथा दुर्बुद्धि का त्याग कर दे। इस भाँति सुन-सुन कर वह ज्ञान को प्राप्त कर लेता है और मोक्ष को भी।

विद्या से रहित मूर्ख व्यक्ति **सिरीस्तन्त्रं तन्वते** जिस प्रकार कोई व्यक्ति किसी समृद्ध किसान के यहाँ कार्य करने लगे तो उसे उत्पन्न अन्न का एक निश्चित भाग दे दिया जाता है। लोक में इसे सीरी कहते हैं। सीर हल का नाम है। उसे चलाने वाला सीरी कहा जाता है। यद्यपि कृषि कार्य बुद्धिमानों द्वारा करने योग्य है। परन्तु जिस की भूमि है वह सब जानता है कि कब कौन-सी फसल लेनी है। कब बीजों को बोना और कब फसल की निराई-गुड़ाई, खाद-पानी देना है। उसका सहयोगी केवल किसान की आज्ञा को मान तदनुसार कार्य करता है। वेद में इसीलिये ऐसे व्यक्ति के लिये कहा है कि वह हल चलाने और तन्तुवाय=वस्त्र बुनने जैसे सामान्य कार्यों में अपना जीवन व्यतीत कर देता है।

ऐसे व्यक्ति का जीवन पशु सदृश ही होता है। खाना-पीना, सोना और बच्चे उत्पन्न करना यही उसका कार्य है। मनुष्य जन्म किसलिये मिला है और इसे प्राप्त कर कौन-से उत्तम कर्म करने चाहियें जिससे इस लोक-परलोक दोनों में सुख से रह सकें इसका उसे ज्ञान ही नहीं होता।

ऐसे व्यक्ति को चाहिये कि वह वेदज्ञ विद्वानों के पास जाकर ज्ञान की प्राप्ति करे। यदि पढ़ना-लिखना सम्भव नहीं हो तो अच्छी बातों को सुनकर तदनुसार आचरण द्वारा अपने जीवन को सफल बनाये अन्यथा यह स्वर्णिम अवसर हाथ से निकल जायेगा।

- क्रमशः

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 400/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड,नई दिल्ली

दूरभाष : 011-23360150, 09540040339 (श्री विजय आर्य)

पीड़ित निराश्रित बच्चों हेतु बनने वाले विद्यालय एवं छात्रावास के लिए बढ़-चढ़कर सहयोग करें

दानी सज्जन अपनी दान राशि निम्न बैंक खातों में जमा कराएं

'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' - खाता सं. 09481000000276
पंजाब एंड सिंध बैंक, IFSC - PSIB 0020948 MICR - 110023121

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' - खाता सं. 1098101000777
केनरा बैंक, IFSC - CNRB 0001098 MICR - 110015025

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 910010008984897
एक्सिज बैंक, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

'आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड' - खाता सं. 0649201001 2620
ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, देहरादून, IFSC - ORBC 0100 649

विशेष : जो सज्जन/संस्थाएं अपनी दान राशि पर आयकर छूट चाहते हैं वे अपनी राशि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम सभा के उपरोक्त बैंक खाते में जमा कराएं। कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9540040339 पर श्री विजय आर्य को सूचित** करके **aryasabha@yahoo.com** तथा **dapsvijayarya@gmail.com** पर डिपोजिट स्लिप ईमेल करें ताकि उन्हें रसीद भेजी जा सके।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के खाते में राशि जमा कराने वाले सज्जन कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9760195053 पर श्री पृथ्वीराज आर्य** को सूचित करें ताकि रसीद जारी की जा सके।

– विनय आर्य, महामन्त्री

"शत हस्त समाहर सहस्त्र हस्त सं किर"
"सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से दान करो"

पीड़ितों की सेवा ही हम सबका राष्ट्रीय एवं धार्मिक कर्त्तव्य

आर्यजन दिल खोलकर दान दें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर उत्तराखण्ड बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ दान की अपील पर प्राप्त दान की सूची

गतांक से आगे -

आर्य केंद्रीय सभा गाजियाबाद (उ.प्र.) के प्रधान श्री सुभाष सिंहल जी द्वारा एकत्र राशि

841	श्रीमती सरोज गुप्ता	1100
842	श्रीमती उषा गर्ग	1100
843	श्रीमती शिल्पा गर्ग	1100
844	श्री वासुदेव जी	200
845	श्रीमती सन्तोष गोयल	500
846	श्री नरेशचन्द जैन	3100
847	श्रीमती विजया रानी	2000
848	**श्रीमती कृष्णा देवी सपरा**	**10000**

- क्रमशः

इस मद में दान देने वाले दानी महानुभावों के नाम इसी प्रकार आर्य सन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किये जाएंगे। *- महामन्त्री*

पुण्यभूमि गुरुकुल कांगड़ी : एक मधुर स्मृति

इसी वर्ष अक्तूबर में कार्यवश हरिद्वार जाना हुआ। मेरे एक मित्र भी साथ थे। संयोगवश विनय आर्य जी से फोन पर पता लगा कि वह गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में ही है। उनका निमन्त्रण पाकर बहुत ही अच्छा लगा। यूं तो अनेक बार हरिद्वार आना जाना होता है और गुरुकुल कांगड़ी को बाहर से देखकर ही सन्तोष करते रहे हैं लेकिन पुन: उस पुण्यभूमि में जाने का विचार आते ही मन में एक तीव्र उत्सुकता जागृत हुई। सायंकाल होने पर अपने होटल को छोड़कर हम गुरुकुल के अति मनोहारी प्राकृतिक परिवेश में पहुंच गए। वहां की ऐतिहासिक इमारतें, स्वर्णिम इतिहास एवं चप्पे चप्पे से अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन्त व्यक्तित्त्व का आभास मुझे लगभग 32 वर्ष पीछे खींचकर ले गया जब मैंने इससे पूर्व यहां अपने जीवन के 15 अति उपयोगी दिन व्यतीत किए थे। अवसर था 1981 में सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रथम शिक्षक शिविर का, जिसमें मैंने अपने छोटे भ्राता यशप्रिय आर्यजी सहित हिस्सा लिया था। यह शिविर तत्कालीन प्रधान संचालक श्री बालदिवाकर जी हंस एवं डा. देवव्रत आचार्य जी (अब स्वामी देवव्रत सरस्वती जी) के निर्देशन में सम्पन्न हुआ था, जिसमें अनेक आर्यवीरों से मित्रता के सम्बन्ध स्थापित हुए। श्री विवेक भूषण जी (अब स्वामी विवेकानन्दजी) भी उस शिविर में शिविरार्थी थे। क्षत-विक्षत अवस्था में भी किसी संस्था का इतना भव्य रुप होता है तो अनुमान लगाया जा सकता है कि यह संस्था अपने सम्पूर्ण स्वरूप एवं यौवन काल में कितनी देदीप्यमान एवं विशाल रही होगी। सारे परिसर में ही अति प्राचीन एवं विशाल वृक्षों की पंक्तियां है जिनमें से अनेकों को तो अवश्य ही कुलपिता स्वामी श्रद्धानन्द का साहचर्य भी मिला होगा। सर्वप्रथम गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के नवनियुक्त कुलपति डा. सुरेन्द्र कुमार जी से उनके बंगले पर भेंट हुई। उनका सरल व्यवहार व आतिथ्य-प्रेम पाकर मन गद्गद हो उठा। अवश्य ही यह संस्था आपके निर्देशन में अपनी पूर्व प्रतिष्ठा प्राप्त करेगी।

कुलपति निवास एवं कुलपति कार्यालय के निकट ही सीनेट हॉल वाले परिसर में अति सुन्दर फूलों के बगीचे के बीचों-बीच आधुनिक सुविधाओं से युक्त अतिथि कक्ष में ठहरने का सौभाग्य मिला। सौभाग्य से उस दिन वहां हल्द्वानी से पधारे। आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड के उपप्रधान डॉ. विनय वेदालंकार भी उपस्थित थे। सभी के साथ देर रात तक आर्यसमाज की विभिन्न परियोजनाओं एवं प्रकल्पों पर गम्भीर विचार-विमर्श हुए तो डॉ. विनय जी ने गुरुकुल कांगड़ी में बिताए अपने विद्यार्थीकाल के रोचक संस्मरण भी सुनाए। देर रात सोने के समय स्वामी श्रद्धानन्द का उदात्त चरित्र आंखों के समक्ष घूम रहा था कि किस प्रकार महात्मा मुंशीराम ने इस विशाल संस्था का निर्माण किया होगा। सन 1900 में कांगड़ी गांव के शेर एवं चीतों से भरे जंगल में कितनी तपस्या से उन्होंने ठाकुर अमन सिंह द्वारा प्रदत्त भूमि को वैदिक शिक्षा का अनूठा केन्द्र बनाया होगा। उस महामानव को नम आंखों से याद करते करते न जाने कब नींद आ गई।

सुबह जल्दी ही हम गुरुकुल के विशाल परिसर में प्रात: भ्रमण हेतु निकल पड़े। सर्वप्रथम 'अमन सिंह द्वार' से होकर 1920 में पुनर्स्थापित गुरुकुल के प्रथम भवन पहुंचे जहां लगभग 500 विद्यार्थियों ने यज्ञ सम्पन्न किया ही था। सुगन्ध अभी चारों तरफ विद्यमान थी। अनेक विद्यार्थियों से उनके अनुभव सुने। यह वही स्थान था जहां 32 वर्ष पूर्व शिविरार्थियों का भी निवास था। बाहर निकलते ही सामने विद्यालय भवन है जो बड़ा ही सुव्यस्थित है हालांकि ब्रह्मचारियों की संख्या के अनुपात में कमरे कम ही है। आगे चलकर दाईं ओर भोजनशाला एवं बाईं और भव्य यज्ञशाला है जिसमें सैकड़ों लोग एक साथ बैठकर यज्ञ कर सकते है। सब कुछ ऐसा लग रहा था मानों हम एक शिक्षण केन्द्र में नहीं अपितु एक महान् तीर्थ स्थान पर हैं। फिर हम विश्व विद्यालय के अन्य संकायों जैसे भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, वेद शोध, संस्कृत, बिजनेस स्कूल एवं पुरातत्त्व संग्रहालय पहुंचे। 9 बजे उसे देखने का संकल्प बनाया। पिछले द्वार से बाहर निकलकर आयुर्वेद महाविद्यालय भी गए, जो एक समय गुरुकुल के ही पूर्ण स्वामित्व में था। वापसी में कर्मचारियों के निवास की तरफ जाते समय बीच में बहुत पुराने गुम्बदनुमा भवन, पुरानी जलशाला है जो काफी ऐतिहासिक है। सारे क्षेत्र में चम्पा, हार सिंगार रजनी गंधा, कनेर आदि के फूलों की खुशबू महक रही थी सूर्य देव भी उदय होकर चहुंओर अपनी रश्मियां बिखराने को उद्यत थे। वहीं कुछ समय उद्यान में बैठकर शुद्ध वायु में प्राणायाम ध्यान का आनन्द लिया। तत्पश्चात् पुराने ऐतिहासिक द्वार से निकल सिंह द्वार पहुंचे जहां चौक पर स्वामी श्रद्धानन्द की आदम कद प्रतिमा स्थापित है, वहीं से गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी का मार्ग भी है। शीघ्र लौटकर यज्ञ में सम्मिलित हुए जिसमें गुरुकुल के मुख्याध्यापक जी, सहायक अधिष्ठाताजी, फार्मेसी प्रमुख एवं कलकत्ता से पधारे श्रीमती हर्षिता एवं रमेश दमानी जी भी उपस्थित थे।

खीर के प्रात:राश के पश्चात् हम संग्रहालय आ गए। स्वामी श्रद्धानन्द के महान व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व को अपने हृदय में समेटे ब्रह्माण्ड, पृथ्वी एवं भारत की प्राचीन संस्कृतियों के विभिन्न आयामों को दर्शाता, प्राचीन बर्तनों, मुद्राओं, आभूषणों, औजारों, हथियारों, भित्तिचित्रों, प्रस्तर-शिल्पों, पुस्तकों एवं स्वामी श्रद्धानन्द के वस्त्रों, खड़ाऊं, कमण्डल आदि को सुंदर ढंग से संग्रहीत किया गया है। महात्मा मुंशीराम के पूरे परिवार जिसमें पुत्र हरिश्चन्द्र, इन्द्र, पुत्रियों, नातियों से भरे पूरे परिवार का चित्र, जलियाँवाले बाग नरसंहार के पश्चात् कांग्रेस अधिवेशन का चित्र, (जिसमें लाला लाजपतराय, मोतीलाल नेहरु, जवाहर लाल नेहरु, लोकमान्य तिलक, नौरोजी आदि बड़े बडे नेता विद्यमान हैं।) स्वामी जी के बलिदान का चित्र और चांदनी चौक में लाखों लोगों द्वारा अन्तिम विदाई के चित्र, स्वामी जी के बलिदान पर उस समय के समाचार पत्रों से स्वामी जी को पं. नेहरु, सरदार पटेल, महात्मा गांधी, जैसे नेताओं द्वारा श्रद्धांजलियां आदि दर्शनीय हैं, कभी कभी ऐसा लगता है कि स्वामी जी के विशाल व्यक्तित्त्व, महान त्याग, अद्वितीय कार्यों को हम लोगों तक कितना कम पहुंचा पाए हैं। तत्पश्चात् गुरुकुल से लगभग 5 किमी. दूर बहादराबाद स्थित गुरुकुल के ही इंजीनियरिंग कालेज में मेरा व्याख्यान था वहां भी गुरुकुलीय विचारों का पूरी तरह प्रभाव दिखाई पड़ा। वहां भी नित्य ही यज्ञ होता है। वहां से सीधे ही मैं गुरुकुल फार्मेसी पहुंचा। हालांकि वर्षों बंद रहने के बाद भी उत्पादन दोबारा शुरु ही हुआ है लेकिन वहां के विशाल इन्फ्रास्ट्रकचर को देखकर ऐसा लगा कि वहां उत्पादन की अपार सम्भावनायें है एवं फार्मेसी पुन: अपने खोए हुए स्थान को हासिल करने में सक्षम है- आवश्यकता है तो केवल थोड़े आधुनिकीकरण एवं सुप्रबन्धन की। माननीय व्यवसायाध्यक्ष एवं प्रोडक्शन मैनेजर ने बड़ी ही तन्मयता से सभी प्रक्रियाओं को विस्तार से समझाया हमने भी अपनी समझ के अनुसार कुछ सुझाव दिए, जिन्हें उन्होंने खुले हृदय से स्वीकार किया।

वापिस गुरुकुल में जाने पर विद्यालय में पुन: गए जहां माननीय कुलपति जी ने विनय आर्य जी से विद्यालय में महाशय धर्मपाल जी एम.डी.एच. द्वारा बनवाए

- शेष पृष्ठ 7 पर

देहरादून चलो! ओ३म् हरिद्वार चलो!

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून का 90वाँ वार्षिकोत्सव समारोह, स्वामी श्रद्धानन्द 87वें बलिदान दिवस पर विशाल भव्य शोभा यात्रा हरिद्वार

एवम्

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय संग्रहालय दर्शन कार्यक्रम

शनिवार, दिनांक 21 दिसम्बर से सोमवार 23 दिसम्बर, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा यात्रा व्यवस्था

2X2 की पुश-बैक डीलक्स बसों द्वारा आना-जाना, धर्मशाला में रहना, हरिद्वार भ्रमण, भोजन व्यवस्था तथा शोभायात्रा के लिए टोपी/दुपट्टा व झंडा आदि सेवाएँ हेतु प्रति व्यक्ति 1000 रुपये मात्र देय होगा।

दिनांक	समय	कार्यक्रम
21.12.2013	रात्रि: 9.00 बजे	देहरादून को प्रस्थान
22.12.2013	प्रात: 6.00 बजे	देहरादून पहुँचकर नित्य कर्म से निवृत होना
	प्रात: 8.00 बजे	आर्य कन्या गुरुकुल महाविद्यालय में नाश्ता व 90वें वार्षिकोत्सव में शामिल होना।
	दोपहर 1.00 बजे	ऋषि लंगर
	दोहपर 2.00 बजे	हरिद्वार को प्रस्थान व हर की पौढ़ी भ्रमण
	सायं 6.00 बजे	गुरुकुल कांगड़ी पहुँचना, भोजन व धर्मशाला में रात्रि विश्राम
23.12.2013	प्रात: 8.00 बजे	नाश्ता गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में
	प्रात: 9.00 बजे	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस शोभा यात्रा
	दोपहर 1.00 बजे	ऋषि लंगर
	दोपहर 2.00 बजे	पुण्य भूमि के लिए प्रस्थान
	सायं 5.00 बजे	दिल्ली के लिए प्रस्थान
	रात्रि 10.30 बजे	दिल्ली पहुँचना

नोट : (1) अपने नजदीकी क्षेत्रानुसार संयोजक को पूरी धनराशि जमा करायें। (2) गर्म कपड़े, शाल/दुशाला ले कर चलें। (3) सीट बुक होने के पश्चात् धनराशि वापिस नहीं की जाएगी यह हस्तांतरित हो सकती है।

निवेदक : **महाशय धर्मपाल** अध्यक्ष - आर्य विद्या सभा; **ब्र. राज सिंह आर्य** प्रधान - दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा; **धर्मपाल आर्य** व. उपप्रधान - दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा; **ओम प्रकाश आर्य** उपप्रधान - दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा; **विनय आर्य** महामंत्री - दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा; **राजीव आर्य** महामंत्री - आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली

मुख्य संयोजक : **सतीश चड्डा**, आर्यसमाज कीर्तिनगर (मोबाईल : 9540041414, 9313013123)

क्षेत्रीय संयोजक : *पश्चिमी दिल्ली :* **रमेश चन्द्र** (सी-2, जनकपुरी, 9868242404), **वीरेन्द्र सरदाना** (ए-ब्लॉक, जनकपुरी, 9911140756), **ललित चौधरी** (विकासपुरी, 9911140756), **राजेन्द्र लाम्बा** (पश्चिम विहार, 9873697099), *पश्चिम-उत्तरी दिल्ली :* **जोगेन्द्र खट्टर** (रानीबाग, 9810040982), **सुरेन्द्र आर्य** (रोहिणी, 9811476663), *उत्तरी दिल्ली :* **महेन्द्र सिंह** (ओचन्दी, 9999148483), **मनवीर सिंह राणा** (केशवपुरम, 9971823677), *केन्द्रीय दिल्ली :* **अरूण प्रकाश वर्मा** (हनुमान रोड, 9810086759), *पूर्वी दिल्ली :* **अभिमन्यू चावला** (शाहदरा, 9013967759), **ईश कुमार नारंग** (दयानन्द विहार, 9911160975), **जगदीश मल्होत्रा** (कृष्णा नगर, 9013013802), *दक्षिणी दिल्ली :* **एस.पी. सिंह** (मेहरौली, 9810118709), **गोविन्द लाल नागपाल** (ग्रीन पार्क, 9811623552) **नरेन्द्र नारंग** (ईस्ट ऑफ कैलाश, 9810140975), **सुरेशचन्द** (गोविन्दपुरी, 9212082892), **चत्तर सिंह नागर** (मस्जिद मोठ, 9211501545)

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्य जी के संयुक्त ब्रह्मत्व में शालाकर्म यज्ञानुष्ठान्सम्पन्न किया गया। जिसमें सर्वश्री धर्मपाल गुप्ता, प्रवीण कोहली, मुकेश खुराना, सुनील गुप्ता, विंग कमा. वी.आर.के. कपूर, एवं श्री विनय अग्रवाल यजमान बने।

उद्घाटन समारोह में गुरुकुल के भव्य भवन निर्माण में सहयोग करने वाले सभी सहयोगियों का भव्य सम्मान किया गया। इस अवसर पर महाशय धर्मपाल जी की अध्यक्षता में ब्र. राजसिंह आर्य जी (प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) ने अपने विचार रखे। भवन निर्माण में 35 लाख रुपये का विशेष सहयोग करने वाले श्री रामकृष्ण तनेजा जी की माता स्व. श्रीमती शान्तिदेवी जी के नाम समर्पित है। इस अवसर पर दिल्ली विधान सभा के अध्यक्ष आर्य नेता डा. योगानन्द शास्त्री जी का उद्बोधन सबके लिए प्रेरणादायक रहा। पूर्व विधायक डा.एस. वत्स, निगम पार्षद श्री देवराज अरोड़ा, श्री कमलकान्त शर्मा, श्री चमनलाल शास्त्री, रोशनलाल आहूजा, श्री शशिदत्त जेटली आदि राजनेता की गरिमामय उपस्थिति रही। गुरुकुल भवन हेतु जमीन दिलाने में मुख्य भूमिका निभाने वाले श्री सुदेश जी का भव्य अभिनन्दन किया गया।

इस अवसर पर आर्य नेता श्री धर्मपाल आर्य, श्री विनय आर्य (महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा), श्री सुरेन्द्र आर्य, श्रीमती उषा किरण आर्या, श्री राजीव आर्य, श्री सत्यानन्द आर्य सहित श्रीमती अंजलि कोहली, प्रिंसिपल एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल की उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। गुरुकुलों के समृद्ध प्राचार्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी का सभी को सम्बोधन करा आशीष प्राप्त हुआ। इस अवसर पर आर्य गुरुकुल रानी बाग एवं आर्य कन्या गुरुकुल सैनिक विहार के अन्न दाता दानवीर श्री मनोज आनन्द जी ने कन्याओं के चरण प्रक्षालन के द्वारा कन्याओं का गृह-प्रवेश का सुन्दर आयोजन भी किया। महाशय धर्मपाल जी सहित सभी गणमान्य महानुभावों ने श्रीफल तोड़कर भवन का उद्घाटन सम्पन्न किया। दिल्ली महानगर के सभी क्षेत्र के आर्य प्रतिनिधियों ने उत्तरी पश्चिमी दिल्ली के सभी सदस्यों एवं अधिकारियों ने इस समारोह में कन्याओं को आशीर्वाद दिया। गुरुकुल की संचालिका माता प्रेमलता शास्त्री जी ने इस अवसर अपनी महती प्रसन्नता प्रकट की। समारोह के संयोजक श्री जोगेन्द्र खट्टर प्रभारी दिल्ली राज्य ने आगंतुक एवं सहयोगी सभी महानुभावों का कन्या गुरुकुल के संचालन में सहयोग करने हेतु आभार प्रकट किया। कार्यक्रम में सर्वश्री धर्मपाल गुप्ता, यक्षदत्त आर्य, मंजुला गोयल, कष्णादेवी सपरा, अंजना चावला, किशोर शर्मा, कमलेश नांगिया, ईश्वर देवी महता, वीरेन्द्र आर्य, श्रवण राज पुरोहित, संतोष कुमार, सुषमा चवला, भारती पसरीचा, सुमेधा आर्य, सरिता आर्या, नीरज आर्य, सुरेन्द्र चौधरी आदि अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित हुए। आर्य कन्या गुरुकुल सैनिक विहार की कन्याओं, आर्य गुरुकुल रानीबाग, आर्य वीर दल दिल्ली, आर्य गुरुकुल तिहाड़ ग्राम का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। – ***संयोजक***

समारोह का संचालन करते हुए श्री जोगेन्द्र खट्टर जी एवं मंचस्थ अतिथिगण।

उद्घाटन समारोह में उपस्थित गुरुकुलीय बच्चे एवं आर्यजनों से भरा पण्डाल

स्वागत एवं सम्मान : श्री मनोज आनन्द जी, डॉ. योगानन्द जी शास्त्री, श्री रामकृष्ण तनेजा जी।

नव निर्मित भवन का निरीक्षण करते महाशय धर्मपाल जी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सार्वजनिक स्थलों पर साहित्य प्रचार के अन्तर्गत

चण्डीगढ़ पुस्तक मेले में हुआ वेद एवं वैदिक साहित्य प्रचार

नेशनल बुक ट्रस्ट नई दिल्ली द्वारा चण्डीगढ़ के परेड ग्राउंड सै. 17 में दिनांक 13 से 18 नवम्बर, 2013 में पुस्तक मेला का आयोजन किया गया था। पूर्व की भाँति इस बार भी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 'वैदिक साहित्य प्रचार-प्रसार स्टाल' लगाया गया। जिसके माध्यम से सैंकड़ो लोगों तक आर्ष साहित्य का प्रचार-प्रसार हुआ। मेले में हर बार की तरह इस बार भी 'सत्यार्थ प्रकाश' के प्रति लोगों में विशेषकर युवाओं में रुचि दिखाई दिया। दिल्ली तथा चण्डीगढ़ की आर्यसमाजों के पदाधिकारी, सदस्य, आर्य महानुभाव बड़ी संख्या में आर्य कार्य कर्ताओं के उत्साह वर्धन के लिए पहुँचे। स्टाल की व्यवस्था मुख्य रूप से श्री राजेश चौधरी ने सम्भाली।

सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने बताया कि पुस्तक मेले साहित्य प्रचार का ऐसा केन्द्र होते हैं जहां हम आर्यसमाज से भिन्न सामान्य जनों तक वेद, वैदिक संस्कृति, आर्यसमाज एवं महर्षि दयानन्द का सन्देश पहुंचा सकते हैं। सभा का प्रयास है कि देश के प्रत्येक कोने में लगने वाले पुस्तक मेलो में हमारी भागीदारी हो।

प्रथम पृष्ठ का शेष

वेद मन्दिर सेवाश्रम के भवन का....

के माध्यम से परमपिता परमेश्वर की 108 विशेषताओं और गुणों द्वारा स्तुति की जाती रही। यज्ञोपरान्त प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. कुलदीप आर्य एवं पं. दिनेश आर्य अपने मधुर संगीत से श्रोताओं को भक्तिरस से सराबोर करते रहे।

7 अक्तूबर से 11 अक्तूबर तक सायं 7 बजे से 9:30 बजे तक आदर्श पुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की कथा का संगीत के माध्यम से 11 अक्तूबर को पं. दिनेश आर्य जी ने अपनी मधुर वाणी द्वारा श्रीराम की कथा का गुणगान कर श्रोताओं को कृतार्थ किया। राम नवमी के नवरात्रों के दौरान हमारे आदर्श श्रीराम के चरित्र का वैदिक रीति से संगीतमय वर्णन श्रोताओं को सचमुच आकृष्ट करता रहा तथा तदनुरूप आचरण की प्रेरणा प्रदान करता रहा।

इस आयोजन के अन्तिम दिवस यानी 12 अक्तूबर को भवन के शिलान्यास का समारोह था। प्रातः 7:00 बजे यज्ञ द्वारा आरम्भ किया गया। इस दिन यज्ञ के ब्रह्मा के रूप में आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान गीता विशेषज्ञ सौम्यसंत आचार्य अखिलेश्वर जी का वरण किया गया। उनकी मधुर वाणी ने भी याज्ञिकों को प्रभावित किया। यज्ञ के उपरान्त प्रातःराश का प्रबन्ध था। तत्पश्चात् आर्यजगत् के वयोवृद्ध) भामाशाह दानवीर महाशय धर्मपाल जी (चेयरमैन एमडीएच मसाले) के कर-कमलों द्वारा आश्रम के भवन का शिलान्यास और शिलापट्ट का अनावरण किया गया। महाशय जी ने इस आश्रम के भवन निर्माण में एक करोड़ की राशि देने की भी घोषणा की। इस उत्सव में काफी संख्या में लोगों की उपस्थिति रही। सभी के दिलों और मुख पर प्रसन्नता एवं उत्साह दिखाई दे रहा था। इस उत्सव की अध्यक्षता श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल जी (उपप्रधान, सा. आ.प्र. सभा) ने की। आस-पास के लोगों के अतिरिक्त आर्यसमाजों से भी आर्यजनता ने पधारकर उत्सव की शोभा बढ़ाई। कुछ विशिष्ट अतिथियों ने भी अपनी उपस्थिति से इस समारोह में चार चांद लगा दिये। इन अतिथियों में सर्वश्री जय भगवान अग्रवाल, विद्यामित्र ठुकराल, ताराचंद बंसल, श्रीमती नीलम गोयल, आचार्य सनत्कुमार, धर्मपाल आर्य, विनय आर्य, पद्मचन्द आर्य, डॉ. योगेशदत शर्मा के नाम उल्लेखनीय है।

समिति अध्यक्ष ब्र. राजसिंह आर्य एवं उनके साथियों के पुरुषार्थ और तप से वर्षों से वीरान पड़ी यह भूमि शीघ्र ही सेवा संस्कृति और साधना की मशाल से रोहिणी क्षेत्र के साथ-साथ लोगों के हृदय को भी आलोकित और उत्साहित कर सकेगी, यह उत्सव द्वारा प्रदर्शित होता है।

उपस्थित आर्यनेताओं, राजनेताओं, विद्वानों के उद्बोधन एवं संन्यासीवृन्दों के आशीर्वचनों का श्रवण करते उपस्थित आर्यजन

युवक-युवती परिचय सम्मेलनों के परिणाम उत्साहवर्धक

आर्य परिवार परिचय सम्मेलन में में पंजीकृत युवक-युवती का विवाह सम्पन्न

सभा प्रधान एवं महामन्त्री पहुंचकर दिया नव विवाहित जोड़े को आशीर्वाद

विवाह के पवित्र बन्धन में बंधने वाले वर-वधू दोनों ही विवाह परिचय सम्मेलन 14 जुलाई 2013 में पंजीकृत थे और वहीं सम्मेलन स्थल पर दोनों परिवारों के मध्य सम्बन्ध निश्चित हुए। भजनोपदेशक श्री श्याम वीर राघव जी की सुपुत्री कु. सविता राघव और अहमदाबाद के श्री विवेक भूषण आर्य का शुभ विवाह संस्कार आर्यसमाज रोहिणी में 14 नवम्बर, 2013 को सम्पन्न हुआ। नवविवाहित जोड़े को सभा प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य और महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने आशीर्वाद दिया।

।। ओ३म्।।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार

महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष, गु.कांगड़ी फार्मेसी

गुरुकुल के आयुर्वेदिक उत्पाद खरीदें
गुरुकुल परम्परा को आगे बढ़ाएँ

प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल चाय, पायोकिल, च्यवनप्राश, मधुमेह नाशिनी, मधु (शहद), ब्राह्मी रसायन, आंवला रस, गुरुकुल शिलाजीत, द्राक्षारिष्ठ, रक्त शोधक, अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार, पो. गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) -249404
फोन - 0134-416073, 09719262983 (व्यावसायाध्यक्ष)

खेद व्यक्त : खेद है कि आर्य सन्देश के गत अंक दिनांक 18 से 24 नवम्बर, 2013 प्रैस गड़बड़ी होने के कारण प्रकाशित नहीं हो सका। पाठकों को हुई असुविधा के लिए खेद है। - सम्पादक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन में
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित
6-7वां आर्य परिवार विवाह योग्य युवक-युवतियों के परिचय सम्मेलन

19 जनवरी, 2014 : आर्यसमाज मल्हारगंज, इन्दौर (म.प्र.) **2 फरवरी, 2014 : आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी, दिल्ली**

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) द्वारा आयोजित आरम्भ किए गए आर्य परिवार विवाह संयोग सेवा के छठवें परिचय सम्मेलन के लिए पंजीकरण आरम्भ हो गए हैं। **यह सम्मेलन रविवार, 19 जनवरी 2014 को प्रात: 10 बजे आर्य समाज मल्हार गंज इन्दौर (म.प्र)** में आयोजित किया जाएगा। दिल्ली में सातवां आयोजन 2 फरवरी, 2014 को होगा। अत: जो आर्य महानुभाव विवाह योग्य अपने पुत्र/ पुत्रियों का पंजीकरण कराना चाहते हैं, वे पंजीकरण फार्म सभा कार्यालय से मंगा सकते हैं अथवा सभा की वैबसाइट www. thearyasamaj.org से डाउनलोड कर सकते हैं। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **200 रुपये (दो सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट** संलग्न कर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1'** के पते पर भेज दें।

जिन आर्य बन्धुओं के आवेदन पत्र **(इन्दौर हेतु) 1 जनवरी, 2014** तथा **दिल्ली हेतु 15 जनवरी, 2014** तक हमारे कार्यालय में प्राप्त हो जाएंगे उनके ही परिचय आर्य युवक-युवती परिचय दिग्दर्शिका में प्रकाशित हो सकेंगे। - **अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक (09414187428)**

आवश्यकता है

आर्य समाज के नियमों कें अनुसार संचालित निराश्रित बालक-बालिकाओं की संस्थाओं में निवास के लिए गुरुकुल पद्धति वाले पुरुष एवं महिला संरक्षक, ड्राइवर और कार्यालय प्रभारी की आवश्यकता है। उम्र 35 से 55 वर्ष के बीच। नशे से मुक्त, शाकाहारी व संस्था के भवन में रहना अनिवार्य। भोजन व निवास के अतिरिक्त वेतन योग्यतानुसार। जिनकी सेवा कार्य में रुचि हो वो **20 दिसम्बर, 2013** तक आवेदन भेजें - **सचिव, आर्य बाल गृह, 4844/24, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002**

सार्वजनिक सूचना

समस्त आर्यसमाजों, शिक्षण संस्थाओं आर्यसमाजी प्रतिष्ठानों एवं विशेष व्यक्तियों के सम्बन्ध में जानकारियां एकत्र करने के लिए सभा की ओर से **श्रीमती मीनू बत्रा** को आउटसोर्सिंग की गई है। वे आपको मो. नं. **9650183335** से फोन करके जानकारियां देने के लिए निवेदन करेंगी। आपसे निवेदन है कि आप मांगी गई सूचनाएं उलब्ध कराने का कष्ट करें। प्राप्त सूचनाओं को सभा के आई.वी.आर. सिस्टम में जन-साधारण की जानकारी के लिए दर्ज किया जाएगा। सभा का आई.वी.आर.एस. नं. 011-23488888 है।- **विनय आर्य, महामन्त्री**

आवश्यकता है

आर्यसमाज का इतिहास जब तक लिखा जा चुका है उससे आगे आर्यसमाज का इतिहास लेखन का कार्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा आरम्भ किया जा रहा है। जो वैदिक विद्वान पूरी लग्न एवं दृढ़ता से इतिहास लिखने की इच्छा रखते हों वे पत्र लिखकर सम्पर्क करें। उचित दक्षिणा एवं सहायक व्यवस्था प्रदान की जाएगी।

मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1

पंजीकरण संख्या : ॥ ओ३म्॥ रसीद संख्या :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित
आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सम्मेलन कार्यालय : 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली -110001 दूरभाष :- 011-23360150, 23365959,
Email: aryasabha@yahoo.com web : www.thearyasamaj.org IVRS No. -011-23488888

पंजीकरण प्रपत्र

: व्यक्तिगत विवरण :

"आवेदक अपना फोटो अनिवार्य रूप से लगाएं।"

1. युवक/युवती का नाम :..गौत्र...................
2. जन्मतिथि:........................ स्थान :........................समय :................
3. रंग........................ वजन .... लम्बाई...................
4. योग्यता (शैक्षणिक एवं अन्य) : ....
....
5. युवक/युवती सेवारत, व्यवसाय में है तो उसका विवरण/ पता ....
.... मासिक आय ....

: पारिवारिक विवरण :

6. पिता/संरक्षक का नाम .... व्यवसाय: .... मासिक आय...........
7. पूरा पता: ....
....
दूरभाष :........................ मोबा :........................ ईमेल: ....
8. मकान निजी/किराये का है..
9. माता का नाम :........................ शिक्षा :........................ व्यवसाय : ....
10. भाई: विवाहित .... अविवाहित: .... बहन : विवाहित .... अविवाहित :.......
11. उम्मीदवार/अभिभावक किस आर्यसमाज के सदस्य हैं ? ....
12. युवक/युवती कैसी चाहिए (संक्षिप्त टिप्पणी दें) ....
13. युवक/ युवती यदि इनमें से हो तो सही पर (✔) लगाएं : विधुर :☐ विधवा:☐ तलाकशुदा: ☐ विकलांग:☐
14. विशेष: किसी और बात का उल्लेख करना चाहते हों तो उसे यहां संक्षेप में लिखें:...............................
....

दिनांक : .... पिता/संरक्षक के हस्ताक्षर

नोट:1. कृपया इस फार्म के साथ निर्धारित रजिस्ट्रेशन शुल्क रु. 400/- (इन्दौर तथा दिल्ली में आयोजित दोनों सम्मेलनों हेतु) अथवा 200/- (इन्दौर या दिल्ली में आयोजित किसी एक सम्मेलन हेतु) का ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करें। अथवा **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा** के नाम **एक्सिज बैंक खाता सं.** 910010001816166 करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें। **परिचय सम्मेलन दिनांक 19 जनवरी 2014 (रविवार)को आर्यसमाज मल्हारगंज इन्दौर (म.प्र.) तथा 2 फरवरी, 2014 रविवार को आर्यसमाज विकासपुरी डी ब्लाक, नई दिल्ली में सम्पन्न होंगे।** कृपया सही (✔) का निशान लगाएं।
☐ इन्दौर में (200/-) ☐ दिल्ली में (200/-) ☐ दोनों में (400/-)

2. विक्लांग युवक-युवतियों तथा विधवा एवं तलाकशुदा युवतियों के लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क में 50% छूट होगी।
3. विवाह सम्बन्ध बनाने से पूर्व दोनों पक्ष अपनी सन्तुष्टि कर लें। सभा इसके लिए उत्तरदायी नहीं होगी।
4. आप इस फार्म को www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर भेज सकते हैं। फोटो कॉपी प्रति भी मान्य है।
5. पंजीकरण के लिए फार्म केवल दिल्ली सम्मेलन कार्यालय में ही भेजे जाएं।
6. माता-पिता/अभिभावक रजिस्ट्रेशन शुदा पुत्र/पुत्री को सम्मेलन में अवश्य लावें। **कॉलम नं. 11 भरे बिना फार्म स्वीकार्य नहीं होगा।**

युवक और युवतियां परस्पर एक-दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव मिलने पर ही विवाह करें - *महर्षि दयानन्द सरस्वती*

शोक समाचार

श्री रामजीलाल आर्य का निधन

आर्यसमाज के सुविख्यात नेता, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के संरक्षक एवं आर्य समाज डी ब्लाक विकासपुरी की वर्षों तक पधान पद रहते हुए सेवा करने वाले श्री राजमीलाल आर्य (गोयल) जी का 16 नवम्बर, 2013 को निधन हो गया, उनका अन्तिम संस्कार उसी दिन पंजाबी बाग श्मशानघाट पर पूर्ण वैदिक रीति से किया गया, जिसमें सभा अधिकारियों ने अनेक आर्यसमाज के गणमान्य अधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। श्रद्धांजलि सभा 28 नवम्बर को दयानन्द वाटिका आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी में सम्पन्न हुई

श्री मोहनलाल ध्यानी को मातृशोक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत औचन्दी ग्राम में संचालित दीवनचन्द स्मारक गोकुलचन्द आर्य धमार्थ चिकित्सालय में कार्यरत श्री मोहनलाल ध्यान जी की माताजी श्रीमती महेश्वरी देवी जी का दिनांक 9 नवम्बर को प्रात: 4 बजे औचन्दी चिकित्सालय में ही निधन हो गया। वे अपने पीछे पति श्री कृष्णदत्त ध्यानी, पुत्र श्री मनोहरलाल, मोहन लाल एवं श्री नरेन्द्रदत्त का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। उनका अन्तिम संस्कार हरिद्वार के खड़खड़ी श्मशान घाट पर किया गया। मुखाग्नि ज्येष्ठ पुत्र श्री मनोहरलाल ध्यानी ने दी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु. प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु. प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.	प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सार्वजनिक स्थलों पर साहित्य प्रचार

मुम्बई पुस्तक मेला

स्थान : बान्द्रा कुर्ला परिसर, मुम्बई

29 नवम्बर से 3 दिसम्बर, 2013 : प्रात : 11 बजे

हैदराबाद पुस्तक मेला

स्थान : एन.टी.आर. स्टेडियम, हैदराबाद (आ.प्र.)

7 से 15 दिसम्बर, 2013 : प्रात : 11 बजे

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन करें तथा अधिकाधिक संख्या में जन सामान्य को पुस्तक मेले में सभा के साहित्य प्रचार स्टाल पर पहुंचने के लिए प्रेरित करें

-: निवेदक :-

विनय आर्य, महामन्त्री *सुखबीर सिंह आर्य, संयोजक*

पृष्ठ 3 का शेष

जा रहे 8 कमरों के एक खण्ड से सम्बन्धित चर्चाएं की। इस प्रकार गुरुकुल के अन्दर ही चल रहे अनेक बड़े प्रकल्पों की जानकारी मिली। विनय आर्य जी की दूरदर्शिता एवं कर्मठता की न केवल हम प्रशंसा ही करें अपितु इन कार्यों में अपना योग्य सहयोग देना भी हम सबका कर्त्तव्य है।

गुरुकुल के भोजनालय में सात्त्विक भोजन करके हम आगे की यात्रा के लिए रुद्रपुर निकल पड़े। सौभाग्य से डॉ. विनय वेदालंकार जी भी हमारे साथ चले, मार्ग में पूरे रास्ते सिद्धान्त चर्चा एवं भविष्य की योजनाओं पर चर्चाएं होती रही। मार्ग में कन्या गुरुकुल नजीबाबाद में आचार्या डॉ. प्रियंवदा वेदभारती के भी दर्शन हुए एवं हालैंड से पधारे हुए एक परिवार से भी रोचक चर्चाएं हुई। बातों ही बातों में हम कब रुद्रपुर पहुंच गए पता ही न चला।

सज्जनों इस सारे संस्मरण को लिखने के मेरे दो उद्देश्य रहे- पहला अपनी यादों को चिरस्थाई बनाने हेतु उन्हें लिखने में पुन: आनन्द की अनुभूति करना, दूसरा- उस आनन्द व सकारात्मता को आप सभी तक भी पहुंचाना। साथ ही अगर मेरा यह लेख हरिद्वार पर्यटन के समय स्वामी श्रद्धानन्द की पुण्यभूमि में पधारने हेतु आपको जरा भी प्रेरित कर सका तो मैं अपने प्रयास को सफल समझूंगा मैं तो केवल आपको विश्वास दिला सकता हूँ कि मेरे मित्र ने भी कहा कि ''यहां के वातावरण में एक जादुई आध्यात्मिक शक्ति एवं ऊर्जा है।''

तो आइये हरिद्वार आगमन पर रखें एक दिन 'पुण्यभूमि के नाम'।

- हर्षप्रिय आर्य, गुड़गांव (हरियाणा)

आर्यसमाज के संस्थापक, वेदोद्धारक, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के परम शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज से प्रेरणाप्राप्त आचार्य राम देव जी द्वारा स्थापित

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून का 90वाँ वार्षिकोत्सव समारोह

रविवार 22 दिसम्बर, 2013 : देहरादून

★यज्ञ : प्रात: 9 बजे ★ध्वजारोहण : प्रात: 10 बजे

★ सांस्कृतिक कार्यक्रम ★विद्वानों के उद्बोधन

87वें बलिदान दिवस पर विशाल भव्य शोभायात्रा

सोमवार 23 दिसम्बर, 2013 : हरिद्वार

★यज्ञ : प्रात: 8:00 बजे ★शोभायात्रा : प्रात: 9:00 बजे

★सार्वजनिक सभा : दोपहर 1:00 बजे

★ पुण्यभूमि दर्शन : सायं 4:00 बजे

आर्य बन्धुओं! हम सबके लिए अत्यन्त सौभाग्य का विषय है कि देवभूमि उत्तराखण्ड में जहां के कण-कण में सज्जनता, सोम्यता, देवत्व और तेजस्विता सुवासित होती है, वहां आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के परम शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने तपश्चर्य से, त्याग से पल्लवित-पुष्पित भूमि कांगड़ी ग्राम में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की, जिनका बलिदान 23 दिसम्बर 1926 को दिल्ली में हुआ।

उन्हीं की प्रेरणा से आर्यसमाज के कर्मठ नेता आचार्य रामदेव जी द्वारा नारी शिक्षा को प्रोत्साहित करने, उन्हें भारतीय वैदिक संस्कृति की शिक्षा देने के लिए कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून की आज से 90 वर्ष पूर्व 22 दिसम्बर को स्थापना की गई।

दोनो ही अवसर पर आर्यसमाज के लिए गर्व का विषय है। अत: आपसे निवेदन है कि आप दोनों कार्यक्रमो में भाग लेने के लिए अवश्य पधारें। आपके आवास, भोजन की व्यवस्था गुरुकुल परिसर में की जाएगी। कृपया पधारने की पूर्व सूचना अवश्य दें। बिना पूर्व सूचना के रात्रि विश्राम की व्यवस्था कर पाना सम्भव नहीं हो सकेगा। आर्यसमाजों से निवेदन है कि अभी से बसों आदि की बुकिंग करा लें तथा सूचित करें कि आपकी बस कब पहुंचेगी और कितने महानुभाव आएंगे, जिससे आवास आदि की व्यवस्था की जा सके।

निवेदक

महाशय धर्मपाल, अध्यक्ष, आर्य विद्या सभा

डॉ. सुरेन्द्र कुमार, कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

डॉ. रामप्रकाश, कुलाधिपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

आचार्य यशपाल, मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल कांगड़ी

डॉ. सविता आनन्द, प्रबन्धक, कन्या गुरुकुल देहरादून

ब्र. राजसिंह आर्य, प्रधान, दिल्ली आ.प्र. सभा

आचार्य विजयपाल, प्रधान, आ.प्र. सभा हरयाणा

सुदर्शन शर्मा, प्रधान, आ.प्र. सभा पंजाब

ई. हजारीलाल अग्रवाल, प्रधान, आ.प्र. सभा उत्तराखण्ड

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 25 नवम्बर, 2013 से रविवार 1 दिसम्बर, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 28/29 नवम्बर, 2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 27 नवम्बर, 2013

ओ३म्

87वाँ स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

शोभायात्रा

बुधवार 25 दिसम्बर, 2013

यज्ञ प्रात: 8.00 से 9.30 बजे तक

स्थान :- स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार, दिल्ली

विशाल शोभा यात्रा का प्रारम्भ प्रात: 10 बजे

विशाल सार्वजनिक सभा

समय : दोपहर 1.00 से 4.00 बजे तक

स्थान : रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, नई दिल्ली -2

सम्मान समारोह : श्री वेदप्रकाश कथूरिया स्मृति पुरस्कार, महात्मा प्रभु आश्रित स्मृति पुरस्कार एवं पं० ब्रह्मानन्द शर्मा आर्य कार्यकर्त्ता पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे।

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर हजारों की संख्या में पहुंचकर संगठन का परिचय दें।

नोट : ऋषि लंगर की व्यवस्था सभा की ओर से रहेगी।

-: निवेदक :-

महाशय धर्मपाल	अरुण प्रकाश वर्मा	सुरेन्द्र कुमार रैली	राजीव आर्य
प्रधान	कोषाध्यक्ष	वरिष्ठ उपप्रधान	महामन्त्री
01125937341	9810086759	9810855695	9212209044

संरक्षक : रामनाथ सहगल, सोमदत्त महाजन, मदन मोहन सलूजा, रामजीलाल गोयल

उप प्रधान : विक्रम नरूला, श्रीमती उषा किरण आर्य, विद्या मित्र ठुकराल, राजेन्द्र दुर्गा, कीर्ति शर्मा

मन्त्री : अजय सहगल, अभिमन्यु चावला, जोगेन्द्र खट्टर, सतीश चड्ढा, सुरेश चन्द गुप्ता

आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य), 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

प्रतिष्ठा में,

क्या आप चाहते हैं कि–

आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?

आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो?

आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो?

आपके मित्रों-रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?

यदि हां! तो

जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ाना चाहते हैं उसकी ईमेल आईडी लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस.एम.एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट द्वारा भेजा जाता रहेगा।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

कैलेण्डर वर्ष 2014

बढ़िया 130ग्रा. आर्ट पेपर

20×30 इंच के आकार में

मूल्य 1200/–रुपये सैंकड़ा

250 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (200/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें–

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1
दूरभाष : 011–23360150,
23365959; 09540040339

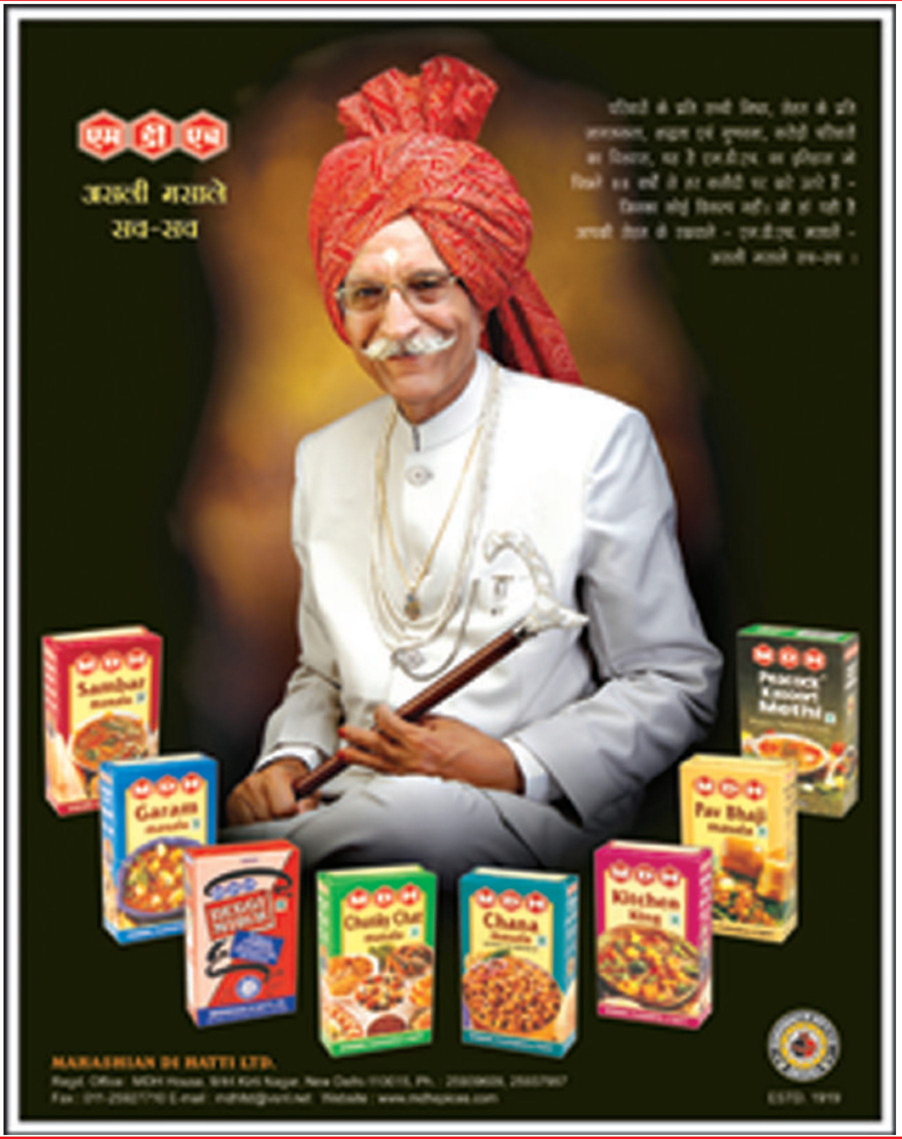

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर